इकाई - 1

1. सुंदर भारत

- श्रीधर पाठक

उन्मुखीकरण

यह है भारत देश हमारा
इसके पर्वत नदियाँ नाले;
हरे - भरे ये खेत निराले;
सबको हर्षित करने वाले ।
सुंदरता में सबसे न्यारा
यह है भारत देश हमारा
सबसे ऊँचा इसे उठायें
सब देशों का मुकुट बनायें
इसकी सेवा में जुट जायें
वारे इस पर जीवन सारा,
यह है भारत देश हमारा

प्रश्न

1. भारत देश में खेत कैसे हैं?
2. देश की शान बढ़ाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?
3. इस कविता का संदेश क्या है?

विधा विशेष

- प्रस्तुत पाठ एक गेय कविता है। कविता साहित्य की सशक्त विधा है। यह कविता सौंदर्यानुभूतिभाव तथा सौंदर्य ध्वनि का उदाहरण है।

उद्देश्य

गीत एक सशक्त विधा है। विद्यार्थियों के हृदय में रमणीय वस्तुओं के प्रति रुचि उत्पन्न करना और उन्हें कविता, गीत आदि की रचना करने की प्रेरणा देते हुए देशभक्ति की भावना को जागृत करना इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

कवि परिचय

श्रीधर पाठक का जन्म 11 जनवरी 1859 को उत्तर प्रदेश के जौंधरी नामक गाँव में हुआ। इनकी शिक्षा संस्कृत और फ़ारसी में हुई । सरकारी सेवा करने के पश्चात् वे प्रयाग में आकर रहने लगे। इन्होंने ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली में कविताएँ लिखीं। उनकी मुख्य रचनाएँ मनोविनोद, काश्मीर-सुषमा, गोपिका गीत एवं भारत गीत है। आपने खड़ी बोली में काव्य रचना कर पद्य व गद्य में एकता स्थापित करने का प्रयास किया। इन्होंने अंग्रेजी तथा संस्कृत की पुस्तकों के पद्यानुवाद भी किये। वे प्राकृतिक सौंदर्य, स्वदेश-प्रेम तथा समाज सुधार की भावनाओं के कवि हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : भारत सुंदर देश है। भिन्न धर्मावलंबियों का देश है। यहाँ की जनता में कर्मनिष्ठता है। लोगों में प्रेम और ममता की अपार दौलत है। यहाँ की प्राकृतिक शोभा ने भारतवासियों के हृदय पर असीम छाप डाली है। इस तरह भारत वंदनीय है।

भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है
शुचि भाल पै हिमाचल, चरणों पै सिंधु-अंचल
उर पर विशाल-सरिता-सित-हीर-हार-चंचल
मणि-बद्धनील-नभ का विस्तीर्ण-पट अचंचल
सारा सुदृश्य-वैभव मन को लुभा रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।।

उपवन-सघन-वनालि, सुखमा-सदन, सुखाली
प्रावृट के सांद्र धन की शोभा निपट निराली
कमनीय-दर्शनीया कृषि-कर्म की प्रणाली
सुर-लोक की छटा को पृथिवी पे ला रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।।

सुर-लोक यहीं पर, सुख-ओक है यहीं पर
स्वाभाविकी सुजनता गत-शोक है यहीं पर
शुचिता, स्वधर्म-जीवन, बेरोक है यहीं पर
भव-मोक्ष का यहीं पर अनुभव भी आ रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।।

हे वंदनीय भारत, अभिनंदनीय भारत
हे न्याय-बंधु, निर्भय, निर्बंधनीय भारत
मम प्रेम-पाणि-पल्लव-अवलंबनीय भारत
मेरा ममत्व सारा तुझमें समा रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।।

प्रश्न
1. नभ का पट कैसे दिख रहा था?
2. भारत सुंदर व सुहावना लगता है। इसके कारण बताइए।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भारत रंगबिरंगे फूलों का उपवन है। स्पष्ट कीजिए।
2. भारत में ममता समायी हुई है। इससे कवि का आशय क्या है ?

(आ) भाव स्पष्ट कीजिए ।

1. मणि-बद्धनील-नभ का विस्तीर्ण-पट अचंचल
   सारा सुदृश्य-वैभव मन को लुभा रहा है।

SCERT TELANGANA

2. भव-मोक्ष का यहीं पर अनुभव भी आ रहा है।
भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है ।

(इ) निम्नलिखित भाव को व्यक्त करने वाली कविता की पंक्तियाँ लिखिए ।

1. भारत अपनी न्याय बंधुता के लिए अभिनंदनीय है ।
2. स्वर्ग यहीं पर है ।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य चंद्र युग मुकुट में कला रत्नाकर है,
नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मंडल है,
बंदी जन खग वृंद शेष फन सिंहासन है,
करते अभिषेक पयोद है बलिहारी इस वेश की,
हे, मातृभूमि तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेष की,
निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है,
षटऋतुओं का विविध दृश्य युत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है,
शुचि-सुधा सींचता रात में तुझ पर चंद्र प्रकाश है,
हे मातृभूमि दिन में तरणि, करता तम पर नाश है ।

प्रश्न

1. काव्यांश में हरित पट किसे कहा गया है?
2. कवि को अपनी सुंदर मातृभूमि कैसी दिखायी देती है?
3. खग, पयोद व नदी शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए ।
4. षट्ऋतुओं के संबंध में कवि की कल्पना क्या है ?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. भारत देश की सुंदरता का वर्णन कीजिए ।
2. भारत की प्रकृति निराली है । यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य सारी दुनिया को लुभाता है । इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर दस-बारह पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि ने भारत देश की तुलना स्वर्ग से क्यों की होगी? स्पष्ट कीजिए।
2. कृषि-कर्म से क्या तात्पर्य है ?

SCERT TELANGANA

(इ) दिये गये चित्र का वर्णन करते हुए एक छोटी-सी कविता की रचना कीजिए।

(ई) "पेड़,पर्वत,नदी,सागर,झील,जलाशय,वन आदि प्रकृति की अपार संपत्ति है । इन्हीं से धरती सजी है ।"उदाहरण सहित अपने शब्दों में प्रशंसा कीजिए ।

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. उर, नभ (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)
2. रुचि, चंचल, सुंदर (विलोम शब्द लिखकर उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. संध्या, आम्र, मयूर (तद्भव रूप लिखिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. दर्शनीय, स्वाभाविक, सुजनता (प्रत्यय पहचानकर लिखिए।)
2. हिमालय, महोत्सव, स्वागत (विच्छेद कर संधि पहचानिए।)
3. सुजनता में 'सु' उपसर्ग है ऐसे 'सु' उपसर्ग का प्रयोग करते हुए पाँच शब्द लिखिए।
4. भारत की परंपरा हज़ारों वर्ष पुरानी है। (ऐसे तीन संख्यावाचक विशेषण वाक्य लिखिए।)

(इ) पाठ के आधार पर उपसर्ग और प्रत्यय के उदाहरण समझिए।

1. अभिनंदन-अभिनंदनीय, दर्शन-दर्शनीय, अवलंबन-अवलंबनीय
2. वन-उपवन, लोक-सुरलोक, धर्म-स्वधर्म

(ई) नीचे दिये गये मुहावरों का वाक्य प्रयोग कर अर्थ लिखिए ।

1. सोने पे सुहागा
2. गले का हार बनना

परियोजना कार्य

भारत के प्रकृति सौंदर्य का वर्णन करते हुए कई गीत व कविताएँ रची गई हैं । इनमें से कोई एक गीत या कविता का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए ।

SCERT TELANGANA